

पाठ 25 अध्याय 21

पिछले सप्ताह हमने गिनती अध्याय 21 शुरू किया था। और, इस अध्याय में हम इस्राएलियों की वादा किए गए देश, कनान की ओर यात्रा की कठिनाइयों से भरी एक निरंतरता देखते हैं। एदोम के राजा ने उन्हें अपने क्षेत्र से होकर जाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था, जो लोगों को मृत सागर के ठीक उत्तर में ले जाने वाला सबसे पसंदीदा मार्ग था, जहाँ वे पूर्व से यर्डन नदी को पार करके कनान में प्रवेश करेंगे। फिर, अराद के राजा ने इस्राएल पर हमला किया, हालाँकि इस्राएलियों ने अंततः उसे हरा दिया, उसके कुछ शहरों को बंदी बना लिया, उन्हें लूट लिया और लूट का माल एक प्रतिज्ञा के भुगतान के रूप में प्रभु को दे दिया। और, एक मानचित्र को देखते हुए यह समझ में आ सकता था कि इस्राएलियों को इस विजित राजा के क्षेत्र से सीधे उत्तर की ओर जाना चाहिए, इससे उनका अंततः पलिशितियों से सामना हो सकता था: ऐसा कुछ जिसे प्रभु चाहते थे कि वे किसी भी कीमत पर टालें। तो आइये हम पद 4 से शुरू करके अध्याय 21 के अंत तक पढ़ें।

गिनती अध्याय 21:4 पढ़ें- अंत तक

मूसा के लिए खुला एकमात्र उचित मार्ग रीड्स सागर का रास्ता या यम सूफ कहलाता था। आधुनिक शब्दों में यह एक अच्छी तरह से यात्रा किया जाने वाला राजमार्ग था जो एदोम के पश्चिमी किनारे से होकर लाल सागर की एक उंगली, अकाबा की खाड़ी के सबसे उत्तरी सिरे पर समाप्त होता था।

यह मार्ग पूरे जंगल की यात्रा में सबसे कठिन था। यह गर्म, ऊबर-खाबर और निर्दयी था। वे नेता जो मिस्र छोड़ते समय अपने जीवन के शिखर पर थे, अब 40 साल तक बेडौइन की तरह रहने से बूढ़े और थके हुए थे। जो लोग मिस्र में रहते हुए बूढ़े थे, वे मर चुके थे और दफनाए जा चुके थे। इस्राएलियों ने खुले तौर पर मूसा के एदोम के चारों ओर जाने के विकल्प पर सवाल उठाया, एक ऐसी यात्रा जो कम से कम एक महीने तक सबसे खराब इलाकों से होकर गुज़रती। आम इस्राएली न तो मूर्ख थे और न ही अनजान, एदोम के आसपास इस कठिन मार्ग को अपनाने का कोई अच्छा व्यावहारिक कारण नहीं था क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि एदोम की खानाबदोश मिलिशिया कभी भी इस्राएल की विशाल 600,000 लोगों की सेना को गुजरने से नहीं रोक सकती थी। एदोम ने पहले जो बल का प्रदर्शन किया था, वह बस इतना ही था; बल का

प्रदर्शन और शायद एक धोखा। उन्होंने इस्राएल पर हमला नहीं किया और न ही उन्हें किसी तरह का नुकसान पहुँचाया जो दर्ज किया गया हो।

लेकिन धमकी ने अपना वांछित प्रभाव प्राप्त किया। इससे भी अधिक, मूसा ने एदोमियों के स्वाभाविक रिश्तेदारी को पहचाना और इतने करीबी रिश्तेदार को गंभीर नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था। दक्षिण की ओर मुरने के कुछ दिनों बाद लोग उदास, भ्रमित और क्रोधित हो गए और यहोवा और मूसा के खिलाफ बोलने लगे। अगर उन्होंने अब तक कुछ सीखा था तो वह यह था कि ऐसा करना मूर्खता थी।

मूसा के खिलाफ बोलना और यह कल्पना करना कि ऐसा करने से यहोवा का कोई लेना-देना नहीं है। जब उन्होंने परमेश्वर के मध्यस्थ के खिलाफ विद्रोह किया, तो उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया। इसलिए उन्हो ंने न केवल मूसा के बारे में ं बल्कि उस परमेश्वर के बारे में भी खुलकर बात की जिसने उन्हें मिस्र के उत्पीरन से छुड़ाया था।

शिकायत हमेशा की तरह ही है, मिस्र में ं हालात बेहतर थे। आप हमें क्यों परेशान करेंगे, हमें इस भयानक जगह पर लाएँगे और फिर हमें मरने देंगे? लेकिन इस बार उन्होंने अपने विद्रोह में एक और साहसिक कदम उठाया: उन्हो ंने कहा कि वे उस भोजन से नफरत करने लगे हैं, जो पिछले 40 सालों से परमेश्वर ने उनके लिए मन्ना उपलब्ध कराया था। उन्हो ंने कहा कि वे स्वर्ग से मिलने वाली रोटी से तंग आ चुके हैं।

कृतज्ञता और विश्वास की इस घ् ंर कमी के जवाब में ं प्रभु ने उन्हें काटने के लिए जहरीले सर्प भेजे, और इसने कई इस्राएलियों को मार डाला। यहाँ हम देखते हैं कि विद्रोह के बावजूद इस्राएल के लोगों की समझ में ं एक निश्चित परिपक्वता थी: उन्हो ंने तुरंत पहचान लिया कि सर्प उन पर एक दैवीय विपत्ति थे और उनके बचने की एकमात्र उम्मीद मूसा, उनके मध्यस्थ से याहोवे उनकी ओर से मध्यस्थता करने की विनती करना था।

अंततः वे समझ गए कि मूसा की स्थिति बेजोर और बेदाग थी। वहाँ कई मध्यस्थ नहीं थे,

कोई लोकतांत्रिक समाधान नहीं था। इससे भी अधिक लोगों ं को मुक्ति और पाप की क्षमा के दूसरे महत्वपूर्ण सिद्धांत का एहसास हुआ: पश्चाताप की आवश्यकता।

मुझे उम्मीद है कि जब हम निर्गमन, फिर लैव्यव्यवस्था और अब गिनती के माध्यम से आगे बढ़ें, तो आपने ध्यान से ध्यान दिया होगा क्योंकि यह उजागर हो चुका है कि पश्चाताप के बिना अनुष्ठान अप्रभावी था। बार-बार परमेश्वर कहते हैं कि यह हृदय की स्थिति है जो मायने रखती है। बार-बार यह स्पष्ट किया गया है कि प्रायश्चित और शुद्धिकरण के विभिन्न अनुष्ठान जादू नहीं बल्कि आज्ञाकारिता का विषय थे, लेकिन अनुष्ठान अपने आप में कुछ भी हासिल नहीं करता है। अपने आप में अनुष्ठान, गलत कामों की स्वीकारोक्ति के बिना, परम पवित्र पर भरोसा और पश्चातापी आत्मा, वास्तव में आत्म-धार्मिकता के बेकार यांत्रिक कृत्यों के अलावा कुछ भी नहीं है। और मैं इसे सुनने

वाले सभी लोगों के लिए जितना संभव हो उतना स्पष्ट करना चाहता हूँ (क्योंकि यह मेरे लिए दुखदायी है कि जिस तरह से इब्रानी इतिहास और पूजा पद्धति और तोरह को इतना बदनाम और विकृत किया गया है) इब्रानी लोगों के बीच कोई आम धारणा नहीं थी कि व्यवस्था के प्रति रोबोट की तरह आज्ञाकारिता यहोवा के साथ उचित और अच्छे संबंध लाती है। चर्च द्वारा यहूदी लोगों को हमेशा काम-धार्मिकता का यह गलत विचार दिया जाता है, जो कि इस्राएली संस्कृति में आदर्श नहीं था। इससे भी अधिक, ऐसा कोई विश्वास नहीं था (सामान्य रूप से), कि व्यवस्था का पालन करने के लिए उनका इनाम केवल ईश्वर को प्रसन्न करने से अधिक कुछ था। बेशक मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इस तरह के विचार और अभ्यास अल्पसंख्यक इब्रानियों के बीच मौजूद नहीं थे, लेकिन यह मुख्यधारा के शिक्षकों या यहोवा के अनुयायियों के तरीके नहीं थे।

मैं इसे दूसरे तरीके से कहता हूँ: यह विश्वास (जो चर्च के भीतर लगभग सार्वभौमिक है) कि पुराने नियम मोक्ष प्राप्त करने का एक कार्य आधारित तरीका था जिसके लिए किसी विश्वास की आवश्यकता नहीं थी, बाद में इसे विश्वास-आधारित मोचन (जिसे नया नियम कहा जाता है) द्वारा प्रतिस्थापित किया गया, जिसने कर्मों को बुरा या अप्रासंगिक घोषित किया, यह पूरी तरह से गलत और गैर-बाइबिल है। सबसे पहले, मोक्ष का अर्थ प्राचीन इब्रानी के लिए वह नहीं था जो यीशु के अनुयायियों के लिए था। उनके लिए मोक्ष का मतलब था कि इस्राएल एक विश्व शक्ति बन जाएगा, जिससे इस्राएल के ईश्वर के नियम सभी मानव जाति के लिए सार्वभौमिक मानक बन जाएंगे। मोक्ष वैसा ही था जैसा कि इस्राएल के साथ तब हुआ जब उन्होंने मिस्र छोड़ा: यह एक सांसारिक उत्पीरक के उत्पीरन से बचकर एक धर्म की स्थापना करना था। कनान में धरती पर परमेश्वर का राज्य। ऐसा कोई विचार नहीं था, और ऐसा कोई विचार नहीं है, कि यदि वे व्यवस्था का पालन करेंगे तो वे स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहने जाएंगे। इब्रानियों ने परमेश्वर की आज्ञा इसलिए मानी क्योंकि वे उससे प्रेम करते हैं। वे उसके नियमों का पालन करते हैं क्योंकि उनके लिए जीवन में सबसे अच्छी बात प्रभु को प्रसन्न करना है। यहोवा के प्रति वफ़ादार रहने के लिए किसी भी तरह का शाश्वत इनाम गौण है।

अब हम सभी इब्रानियों को ऐतिहासिक रूप से देख सकते हैं, और पवित्र शास्त्र में लिखे गए सिद्धांतों और नियमों के बजाय मानव निर्मित परंपराओं (जिसे आज चर्च आस्था के सिद्धांत कहता है) को बनाने और उनका पालन करने पर धीरे-धीरे और लगातार ध्यान केंद्रित करने के लिए एक या दूसरे स्तर पर उनकी आलोचना कर सकते हैं (यीशु ने इसके लिए अपने लोगों को फटकार लगाई)। और विश्वासियों के रूप में हम निश्चित रूप से जान सकते हैं कि परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के बावजूद बहुत से यहूदियों ने उनके मध्यस्थ और पुत्र, यीशुआ को अस्वीकार कर दिया है, और यह उन्हें इस तरह से दोषी ठहराता है कि मेरा दिल दुखी हो जाता है।

हालाँकि, क्योंकि ईसाइयों ने यहूदियों के तोरह, परंपरा और यहूदी धर्म को देखने के तरीके के इस विकृत दृष्टिकोण को स्वीकार किया है और बढ़ावा दिया है, इसलिए हम न केवल पूरे लोगों पर धार्मिक मूर्खता और कानूनवाद का झूठा आरोप लगाते हैं, बल्कि हम खुद पुराने नियम पर भी झूठा

आरोप लगाते हैं (और इस तरह परमेश्वर, वचन के लेखक पर) कि उन्हो ोंने सबसे पहले कानूनवाद की स्थापना की (भले ही कुछ समय के लिए ही क्यों न हो, जैसा कि डिस्पेंसेशनलिस्ट शिक्षण है)। मैं आज आपको स्पष्ट रूप से बताता हूँ कि यह एक झूठ है जिसने सदियों से चर्च के दिल को नष्टकर दिया है, उन लोगो ुं को हाशिए पर डाल दिया है जिन्होंने परमेश्वर के पवित्र वचन को लिखा और संरक्षित किया और जिन्होंने हमारे उद्धारकर्ता को बनाया, और चर्च और यहूदी लोगों (जहाँ भाईचारा होना चाहिए) के बीच एक तरह की दुश्मनी पैदा की है, जैसा कि इस्राएल और एदोम (याकूब और एसाव) के बीच था।

वापस अपनी कहानी पर आते हैं ं। मूसा ने लोगों को परमेश्वर के विरुद्ध अपने पाप स्वीकार करते हुए और उनके पश्चातापी हृदय को भी देख ा और इसलिए उनके मध्यस्थ ने परमेश्वर से उन्हें चंगा करने के लिए कहा। इस प्रकार हम बाइबिल की सबसे कठिन और विवादास्पद कहानियों में से एक पर आते हैं: पीतल के सर्प की कहानी जो एक खंभे पर लटकी हुई थी। और हम पढ़ते हैं कि जब इस्राएलियों ने इस पीतल के सर्प को देखा तो उनके सर्प के काटने से घाव ठीक हो गए। जो बात इसे और भी कठिन बनाती है वह यह है कि यीशु ने स्वयं इस घटना का उल्लेख किया है और यहाँ तक कि इसके और उनके आने वाले क्रूस पर चढ़ने के बीच तुलना भी की है।

यूहन्ना 3:14 में यीशु को दिए गए शब्दों को सुनें यूहन्ना 3:14 "और जैसे मूसा ने जंगल में सर्प को ऊँचे पर चढ़ाया, वैसे ही अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए:

तो फिर इस जंगल की घटना से हमें क्या सीखना चाहिए? यह पीतल का सर्प मसीह की मृत्यु से किस तरह तुलना करता है? चलिए सबसे पहले देखते हैं कि गिनती क्या कहती है और क्यों।

यहोवा ने मूसा से कहा कि वह एक ज्वलन्त सर्प बनाए और उसे एक खंभे पर चढ़ा दे और जब कोई व्यक्ति विषैले सर्पों के इस दिव्य आदेशित प्रकोप से काटा हुआ हो, तो वह उसे देखेगा और वह ठीक हो जाएगा। हमें बताया गया है कि मूसा ने उसका पालन किया, तांबे या कांसे से सर्प बनाया और वास्तव में सर्प को देखकर वे लोग ठीक हो गए जिन्हें काटा गया था; और बस इतना ही कहा गया है। यह हमारे लिए तुरंत एक चेतावनी होनी चाहिए कि हम यहाँ जो लिखा है, उससे अधिक न पढ़ें, या बहुत अधिक अटकलें न लगाएँ (जैसा कि बर े पैमाने पर विशेष रूप से गैर- यहूदी ईसाइयों द्वारा किया गया है)।

आइए मूल भाषा में खंभे और सर्प के बारे में वाक्यांश की जाँच करके शुरू करें: इब्रानी में कहा गया है कि मूसा को एक साराप बनाना था। और, यहीं से कठिनाई शुरू होती है। क्योंकि अगर हम यशायाह 6:2 को देखें, तो हमें यह उल्लेखनीय पद दिखाई देता है। यशायाह 6:2 उसके ऊपर साराप खड़े थे, जिनमें ुं से प्रत्येक के छः पंख थे, दो से उसने अपना चेहरा ढका था, दो से उसने अपने पैरों को ढका था, और दो से वह उर रहा था। और क्या आप यह नहीं जानते कि इस अनुच्छेद में स्वर्गीय सेराफिम का शब्द और इब्रानी वर्तनी बिल्कुल वही है, साराप. जो मूसा ने खंभे पर लटकाया था, जिसका आमतौर पर अनुवाद उग्र सर्प के रूप में किया जाता है। बात यह है कि सर्प या सर्प के लिए इब्रानी शब्द नचश है। और न तो गिनती 21:8 में, न ही यशायाह 6:2 में, नचश

शब्द का इस्तेमाल किया गया है, केवल साराप। क्या यह संभव है कि उस खंभे पर जो लटका था वह सर्प नहीं था, बल्कि कुछ और था क्योंकि साराप शब्द की सटीक परिभाषा नहीं दी गई है? ऐसा संभव नहीं है क्योंकि 2 राजा 18:4 में हमें इसी वस्तु के बारे में एक और उल्लेख मिलता है, जो जंगल की घटना के 5 या 6 शताब्दियों के बाद की बात है।

इस आयत को सुनें: 2 राजा 18:4 उसने (हिजकिय्याह ने) ऊँचे स्थानों को हटा दिया, पवित्र स्तंभों को तोर दिया, और अशेरा को काट डाला। उसने मूसा द्वारा बनाए गए पीतल के सर्प को भी टुकड़े-टुकड़े कर दिया, क्योंकि उन दिनों तक इस्राएल के पुत्र उसके लिए धूप जलाते थे, और उसका नाम नहुशतान रखा गया।

यहाँ पीतल के सर्प के लिए इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द नेकोशेत नचश था, नेकोशेत का मतलब पीतल होता है, और यहाँ हम सर्प या सर्प के लिए अपना सामान्य इब्रानी शब्द नचश पाते हैं। इसलिए यहाँ 2 राजाओं में एक स्वतंत्र विवरण है कि वास्तव में खंभे पर रखी गई वस्तु सर्प के आकार की थी, कम से कम सर्प जैसी दिखने वाली चीज़।

लेकिन यह पूरी घटना सभी तरह के कारणों से बहुत परेशान करने वाली है, जिनमें से सबसे कम यह नहीं है कि उत्पत्ति के पहले अध्याय से लेकर प्रकाशितवाक्य तक शैतान का प्रतिनिधित्व करने के लिए सर्प बाइबिल का प्राथमिक पात्र है। तो क्या यहाँ जो हमारे पास है वह एक ईश्वर द्वारा निर्धारित शैतान का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है जिसे एक खंभे पर लटका दिया गया है (जो किसी तरह सर्प के काटने को ठीक करता है) और फिर नए नियम में इसकी तुलना क्रूस पर मसीहा के अनुभव से की गई है, जो किसी और ने नहीं बल्कि खुद यीशु ने किया है? फिर भी जब 5 शताब्दियों बाद हिजकिय्याह ने खंभे और सर्प को नष्ट कर दिया तो ऐसा करने के लिए उसकी प्रशंसा की गई?

आइए इस प्याज़ को एक और परत से छीलकर समझें कि आखिर वह कौन सी समस्या थी जिसके कारण हिजकिय्याह ने उस लंबे समय से संजोए गए कांस्य सर्प को नीचे गिराकर नष्ट कर दिया, जो इस्राएलियों के जंगल के अनुभव का एक आभासी प्रतीक था। क्या हिजकिय्याह ने इसे नीचे उतारकर कोई बुरा काम किया या अच्छा काम? क्या यह परमेश्वर को प्रसन्न करता था या यह मसीह के क्रूस पर थूकने से अलग नहीं था?

खैर, यहाँ बताया गया है कि हिजकिय्याह ने जो किया वह उसने क्यों किया: 2 राजा 18:1 अब यह इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे के तीसरे वर्ष में हुआ, कि यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह राजा बना। 2 जब वह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम अबी था जो जकर्याह की बेटी थी। 3 और उसने अपने पिता दाऊद के सब कामों के अनुसार यहोवा की दृष्टि में ठीक

किया।

इसके अलावा, जैसा कि हमने अभी पद 18:4 में पढ़ा, “क्योंकि उन दिनों तक इस्राएल के पुत्र उसके लिये धूप जलाते थे; और उसका नाम नहुशतान खंभा और सर्प एक ऐसी मूर्ति बन गए थे जिसकी इस्राएली पूजा करते थे।

धूप जलाना यह पूजा की इतनी महत्वपूर्ण वस्तु बन गई थी कि उन्हें एक नाम भी दिया गया था: नेहुशतान। लेकिन हिजकिय्याह के दिनों में इस्राएली जो कर रहे थे, वह जंगल में मूसा के साथ परमेश्वर के निर्देश पर जो हुआ था, उससे किस तरह से अलग था? और भी अधिक क्योंकि मसीह ने (किसी तरह से) अपने क्रूस पर चढ़ने की तुलना पीतल के सर्प को एक खंभे पर उठाए जाने से की थी, क्या हम उसी खंभे, उस क्रूस की पूजा नहीं करते जिस पर मसीह को उठाया गया था? उस खंभे में क्या अंतर है जिसे परमेश्वर ने मूसा के दिनों में साराप के साथ खड़ा करने का आदेश दिया था, जबकि उसी खंभे का इस्तेमाल हिजकिय्याह के युग में पूजा की वस्तु के रूप में किया जाता था, जबकि यीशु को मारने के लिए इस्तेमाल किया गया खंभा आज अनिवार्य रूप से पूजा की वस्तु है?

कठिन प्रश्न। प्राचीन रब्बियों के पास पीतल के सर्प और, अलग-अलग, परमेश्वर के सिंहासन की रखवाली करने वाले सेराफिम दोनों के बारे में कुछ बहुत ही रोचक विचार हैं। और कृपया ध्यान रखें कि ठीक उसी इब्रानी शब्द (साराप) का इस्तेमाल यहाँ गिनती में खंभे पर सर्प के लिए और उन स्वर्गीय प्राणियों के लिए किया गया है जिन्हें अनुवादक सेराफिम कहते हैं। आगे जो कुछ लिखा गया है, वह कमोबेश इन रब्बियों और संतों में से कई के विचारों का सारांश है, जिसमें मेरे अपने कुछ विचार भी शामिल हैं।

सबसे पहले, आइए यशायाह 6:2 पर फिर से नज़र डालें: यशायाह 6:1 राजा उज्जिय्याह की मृत्यु के वर्ष में, मैंने प्रभु को एक सिंहासन पर बैठे देखा, जो बहुत ही ऊँचा और महान था, और उसके वस्त्र का घेरा मंदिर को भर रहा था। 2 सेराफिम उसके ऊपर खड़े थे, जिनमें से प्रत्येक के छह पंख थे; दो से उसने अपना चेहरा ढका था, दो से उसने अपने पैरों को ढका था, और दो से वह उर रहा था। 3 और एक ने दूसरे को पुकार कर कहा, “पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं का यहोवा है। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है।” 4 और पुकारने वाले की आवाज़ से डेबढ़ियों की नींव काँप उठी, जबकि मंदिर धुँ से भर रहा था। 5 तब मैंने कहा, “हाय मुझ पर, क्योंकि मैं नाश हो गया। क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ, और मैं अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा राजा को अपनी आँखों से देखा है।” 6 तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए मेरे पास उरकर आया, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था। 7 और उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा, “देख, इसने तेरे होठों को छू लिया है। इसलिये तेरा अधर्म दूर हो गया है, और तेरे पाप क्षमा हुए हैं।”

तो हम सेराफिम (इब्रानी में, साराप) के बारे में क्या कह सकते हैं। वे स्वर्गीय आत्मिक प्राणी

हैं; उनके कई पंख हैं, वे प्रभु के ऊपर खड़े हैं जो अपने सिंहासन पर बैठे हैं, और वे इतने पवित्र और शुद्ध हैं कि उन्हें स्वर्गीय वेदी से अंगारे लेने की अनुमति है। साराप शब्द का अर्थ आंशिक रूप

से “जलना “ या “आग “ है और यह यशायाह 6 में स्वर्गीय वेदी के आग के अंगारों के साथ इस संबंध से आता है। इसलिए परिभाषा के अनुसार सेराफिम को उग्र प्राणी के रूप में देखा जाता है। याद रखें कि ये आत्मिक प्राणी हैं इसलिए किसी भी भौतिक चीज़ के साथ उनका जुड़ाव आलंकारिक है।

इससे हम देखते हैं कि वे हवा (पंखों) के माध्यम से उर सकते हैं और साथ ही स्वर्ग और पृथ्वी के बीच आगे-पीछे भी जा सकते हैं, और उन्हें ईश्वर के सबसे करीब पहुँचने की अनुमति है। उन्हें स्वर्गीय वेदी की आग से शुद्ध करने वाले कोयले ले जाने की भी अनुमति थी जो अधर्म को दूर करती है और पापों को क्षमा करती है। सेराफिम आश्चर्यजनक रूप से पवित्र, शक्तिशाली हैं, और उन्हें जबरदस्त अधिकार दिया गया है। और वे आग से जुड़े हुए हैं।

इसके अलावा अगर हम चेरुबिम और सेराफिम के बाइबिल वर्णन की तुलना करें तो हम पाते हैं कि वे आम तौर पर एक जैसे हैं। कुछ ऋषियों ने सुझाव दिया है कि वे एक ही चीज़ के लिए दो नाम हैं। वास्तव में यह संभावना है कि जबकि चेरुबिम एक विशेष प्रकार के स्वर्गीय प्राणी के लिए उचित नाम है, साराप (या सेराफिम) का अर्थ संभवतः एक वर्णन से अधिक है और यह केवल चेरुबिम की एक विशेषता, उग्र का वर्णन कर सकता है। दूसरों का मानना है कि वे समान रूप से उच्च क्रम के दो प्राणी हैं, कि वे अनिवार्य रूप से एक ही प्रकार के प्राणी हैं, लेकिन उन्हें थोड़े अलग कार्य दिए गए हैं। जो भी हो, चेरुबिम और सेराफिम स्वर्गीय प्राणियों का एक विशेष और उच्च क्रम है, जिसे आमतौर पर स्वर्गदूत कहा जाता है। वे परमेश्वर के सिंहासन और उनकी व्यक्तिगत पवित्रता के संरक्षक हैं।

अब यहाँ हमें अपने विषय को थोड़ा और विस्तृत करना होगा ताकि शैतान को भी इसमें शामिल किया जा सके। हमें बताया गया है कि शैतान की शुरुआत एक बहुत ही उच्च कोटि के स्वर्गीय प्राणी के रूप में हुई थी। वह स्वर्गीय प्राणियों में सबसे सुंदर और सबसे शक्तिशाली था। और स्वर्ग में बड़ा युद्ध हुआ, मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों ने अजगर से लड़ाई की, और अजगर और उसके स्वर्गदूतों ने लड़ाई की और वे प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिए फिर कोई स्थान न रहा। और वह बड़ा अजगर, अर्थात् वह पुराना सर्प, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार को भरमाता है, निकाल दिया गया; और पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके स्वर्गदूत उसके साथ गिरा दिए गए। (प्रकाशितवाक्य 12:7-9) यह कथन हमें अपोकलिफा की एक पुस्तक में मिलता है, लेकिन यही कथन प्रकाशितवाक्य में भी लगभग शब्दशः मिलता है, जिसे हम शीघ्र ही देखेंगे।

फिर, हम यशायाह 14:12 में यह चौंकाने वाला अंश पाते हैं: यशायाह 14:12 “हे भोर के तारे, हे भोर के पुत्र, तू आकाश से कैसे गिर पड़ा! तू जो जातियों को दुर्बल करता था, तू काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया गया है। 13 “परन्तु तू ने मन में कहा था, ‘मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा, और उत्तर दिशा की छोर में सभा के पर्वत पर बैठूँगा। 14 मैं बादलों से भी ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा; मैं अपने आप को परमप्रधान के तुल्य बनाऊँगा।’ 15 “तौभी तू अधालोक में, अर्थात् गरहे की गहराइयों में धकेल दिया जाएगा।

’ ’ यहाँ हमारे पास एक कथन है जो हमें बताता है कि शैतान स्वर्ग में था, वह बहुत खूबसूरत था, लेकिन उसे परमेश्वर को हरपने की उसकी इच्छा के कारण पृथ्वी पर भेजा गया था। लेकिन वह बिना लड़े नहीं गया।

अब, यहाँ एक और पद है और हम कम से कम कुछ टुकड़ों को एक साथ जोरने के करीब पहुँच रहे हैं। यह हममें से अधिकांश लोगों के लिए एक परिचित पद है, क्योंकि यह शैतान, सर्प से निपटने के बारे में है, जिसके परिणामस्वरूप उसने हव्वा को अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में भाग लेने के लिए धोखा दिया। उत्पत्ति 3:14 और यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, “क्योंकि तूने यह किया है, इसलिए तू सभी घरेलू पशुओं और सभी जंगली पशुओं से अधिक शापित है; तू अपने पेट के बल चलेगा, और अपने जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा।

अब ध्यान दें कि सर्प (शैतान) को इस बात का श्राप दिया गया था कि उस दिन से वह अपने पेट के बल रेंगेगा। जाहिर है कि वह इस समय से पहले सीधा खड़ा था, अन्यथा उसके पेट के बल रेंगने के श्राप का कोई मतलब नहीं होता। और हमें कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि शैतान पृथ्वी ग्रह पर पहला सर्प था। बाइबिल यह स्पष्ट करती है कि यह “सर्प” मैदान के किसी भी जानवर या किसी अन्य जीवित चीज़ से अलग था। वह अद्वितीय था; वास्तव में, वह बोल सकता था!

ठीक है, मैं आपको एक और छोटी सी जानकारी देना चाहता हूँ: आपमें से अधिकांश लोगों के लिए एक और बहुत ही परिचित मार्ग। प्रकाशितवाक्य 12:7 और स्वर्ग में लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लर रहे थे। और अजगर और उसके स्वर्गदूतों ने लड़ाई की, 8 और वे पर्याप्त शक्तिशाली नहीं थे, और स्वर्ग में उनके लिए फिर कोई जगह नहीं मिली।

बात यह है: सर्प के प्रतीक के अलावा, शैतान को अब ड्रैगन के प्रतीक के रूप में भी दर्शाया गया है। और जाहिर है कि यह शैतान है, और वह स्वर्गदूतों से भी ऊँचा था क्योंकि यह उसके स्वर्गदूतों और माइकल के साथ उसकी लड़ाई के बारे में भी बताता है जिसके बारे में हमने कुछ मिनट पहले पढ़ा था।

तो ड्रैगन क्या है? सबसे पहले, ड्रैगन एक पौराणिक प्राणी है जो प्राचीन चीन से जुड़ा है। ऐसा नहीं लगता कि यह मध्य पूर्वी संस्कृति या लोककथा का हिस्सा है। निश्चित रूप से, मध्य पूर्व के अन्य देव प्राणी भी थे जो आम तौर पर आधे मनुष्य और आधे जानवर थे, और जिनके पंख थे लेकिन वे ड्रैगन

नहीं थे। ड्रैगन सभी जानवर थे, उनमें कोई मानवीय तत्व नहीं था। चूँकि ड्रैगन भी ग्रीक लोककथा का हिस्सा बन गए थे, इसलिए यूनानियों ने कल्पना के इस प्राणी के लिए अपना स्वयं का शब्द गढ़ लिया, इस प्रकार हमें नए नियम में ग्रीक शब्द ट्रैकन मिलता है, जिसे हम अंग्रेजी में ड्रैगन कहते हैं।

अब युहन्ना के मन में क्या था जब उसने प्रकाशितवाक्य में "ड्रैगन" के रूप में अनुवादित शब्द चुना? क्या यह वह पौराणिक अग्नि-श्वास प्राणी था जिसे कोई भी इब्रानी व्यक्ति शुद्ध कल्पना के रूप में लेता, यदि वे इससे परिचित भी होते? ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि यहूदियों को पता था कि ड्रैगन क्या होता है, अपने साहित्य में ड्रैगन की छवि को शामिल करना तो दूर की बात है। इसलिए यह बहुत ही असंभव है कि युहन्ना के मन में यही था। मुझे संदेह है कि युहन्ना ने अपनी संस्कृति (अपनी इब्रानी संस्कृति) के संदर्भ में कुछ और देखा था, जिसका चीनी शैली का ड्रैगन निश्चित रूप से हिस्सा नहीं था। यहूदी युहन्ना ने बाइबिल के प्राणी के अनुरूप कुछ और कल्पना की होगी, न कि कुछ ग्रीक, कुछ दुष्ट, उग्र, एक आध्यात्मिक प्राणी जिसके पंख थे और जो उर सकता था।

में स्वर्ग में सीधे खड़े पंखों वाले सेराफिम, अदन की वाटिका में सांसारिक सर्प, जिसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था (जो पहले सीधा खड़ा था, लेकिन उसे अपने पेट के बल रेंगने का श्राप दिया गया था), साराप, जिसे खंभे पर रखा गया था और हवा में ऊँचा उठा दिया गया था, तथा ड्रैगन, जो शैतान है, जो अग्निमय है, पंखों से उरता है, सर्प जैसा दिखता है, तथा प्रकाशितवाक्य में शैतान के रूप में पहचाना गया है, के बीच एक दिलचस्प संबंध देखता हूँ।

क्या ऐसा हो सकता है कि स्वर्ग से निकाला गया स्वर्गीय प्राणी एक साराप (सेराफिम) था, और यह एक विद्रोही साराप था जो पृथ्वी पर शैतान के नाम से जाना गया? यह काफी दिलचस्प है कि यीशु ने शैतान के बारे में यह कहा: लूका 10:18 और उस ने उन से कहा, मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरते हुए देख रहा था।

बाइबिल में बिजली चमकना आग का ही एक रूप है। इसे कभी-कभी स्वर्ग से आने वाली आग भी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, यीशु वास्तव में कह रहे थे, "मैंने शैतान को आकाश से आग की लपटों की तरह गिरते देखा। और हम जानते हैं कि सेराफिम एक आग से जलने वाला स्वर्गीय प्राणी था। जैसा कि गिनती 21 में कहा गया है, यह मूसा के खंभे पर रखा गया एक साराप था और उसे ऊपर उठाया गया था। और यह कि प्रकाशितवाक्य का तथाकथित ड्रैगन, जिसे शैतान के रूप में पहचाना जाता है, में उग्र सर्प की सभी विशेषताएँ हैं और उसके पास स्वर्गीय सेराफिम के पंख और उरने की क्षमता है। अब, बाइबिल में कुछ जगहें हैं जो कहती हैं कि स्वर्गीय प्राणी जिसे बाहर निकाल दिया गया था वह करूब था। लेकिन, जैसा कि मैंने पहले कहा, जब आप करूब और सेराफिम के विवरण की तुलना करते हैं, तो वे लगभग समान हैं, केवल संभावना है कि उनके कर्तव्य अलग-अलग थे, और संभवतः साराप (जिसका अर्थ है उग्र) करूब की एक विशेषता है।

मैं आपको एक और रोचक बात बताना चाहता हूँ। प्राचीन काल में यह आम बात थी कि किसी जहरीले जीव के काटने या डंक मारने पर उसके असर से बचने के लिए जहरीले कीराया जानवरों के ताबीज का इस्तेमाल किया जाता था। इसलिए अगर आपको बिच्छू ने काट लिया है तो कोई जादूगर बिच्छू के प्रतीक का उपयोग करके आप पर अनुष्ठान कर सकता है। यह दिलचस्प है कि जबकि हम इसे एक हास्यास्पद अंधविश्वास मानते हैं, आधुनिक युग में चिकित्सा प्रतिष्ठान किसी व्यक्ति को जहर का प्रतिकार करने के लिए किसी जहरीले जीव के जहर का इंजेक्शन लगाते हैं। यह वास्तव में

एक ही सिद्धांत है, केवल एक आध्यात्मिक है और दूसरा अपनी प्रकृति में भौतिक है। मिस्र में, शाही अधिकार को दर्शाने के अलावा, सर्प को प्रजनन और उपचार दोनों के प्रतीक के रूप में देखा जाता था: इस तरह से इस्राएल ने अग्नि सर्प के बारे में सोचा होगा। और वास्तव में, यह सर्पदंश के उपचार के उद्देश्य से ही था कि परमेश्वर ने सर्प को बनाया और उसे डंडे पर

दंश से ठीक होने के रूप में देखना रखा। इसलिए इस्राएलियों के लिए सर्प के प्रतीक को सर्प सामान्य बात थी, ऐसा कुछ जो बिल्कुल भी अजीब नहीं होता। तो हम इस सब से क्या सीख सकते हैं? सबसे पहले, खंभे पर रखा गया साराप प्रतीक, अपने आप ठीक नहीं होता। लोग इसे छूते नहीं थे। इसके साथ कोई अनुष्ठान नहीं किया जाता था। यह कोई जादुई वस्तु नहीं थी, लेकिन यह एक जानी-पहचानी वस्तु थी। यहाँ तक कि इसके उपयोग का बाहरी सिद्धांत भी जाना-पहचाना था। हालाँकि, पश्चाताप और भरोसे के साथ इसे देखने से ही यह ठीक हो जाता था। दूसरा, कम से कम, खंभे पर रखा गया साराप मसीहाई रंग का है क्योंकि यीशु ने इसे मसीहाई लगाव दिया था। और, कम से कम, मसीहाई अर्थ यह है कि जिस तरह से साराप को खंभे पर कीलों से ठोंककर हवा में लटका दिया जाता है, उसी तरह यीशु को भी किया जाएगा, जिससे वह खुद को सूली पर चढ़ाए जाने की भविष्यवाणी कर रहा होगा। खंभे पर कीलों से ठोंक दिए जाने की तुलना से परे यीशु का क्या मतलब था, यह सिर्फ अटकलें हैं, जिसके कारण कई रूपक गढ़े गए हैं।

अब इस बारे में कुछ अन्य दिलचस्प धार्मिक विचार सामने आए हैं, लेकिन इन विचारों को अटकलों की श्रेणी से ज्यादा कुछ नहीं माना जा सकता। उदाहरण के लिए, जब सर्प को खंभे पर रखा गया था, तो उसका उद्देश्य वास्तव में सर्प को देखना नहीं था, बल्कि सर्प के ज़रिए स्वर्ग की ओर देखना था। और यह कि मसीह के साथ भी मूलतः यही था, कि उसका शरीर (उसका मानवीय हिस्सा) महत्वपूर्ण वस्तु नहीं था, बल्कि यह उसके शरीर के ज़रिए ईश्वर के स्वर्गीय सिंहासन की ओर आस्था से देख रहा था। हो सकता है।

एक और मानक शिक्षा यह है कि जिस तरह पाप में मरने वाले लोग क्रूस पर मरने वाले एक आदमी (यीशुआ) के माध्यम से बचाए जाते हैं, उसी तरह सर्प के काटने से मरने वाले लोग एक डंडे पर लटके हुए सर्प के द्वारा बचाए जाते हैं (ठीक हो जाते हैं) शायद। एक और बात यह है कि चूँकि खंभे पर रखा सर्प काँसे का बना था, लेकिन संभवतः ताँबे का, इसलिए उसका रंग लाल होना चाहिए था। और पवित्र शास्त्र में लाल रंग खून का प्रतीक है।

इसलिए यह यीशु द्वारा वर्षों बाद क्रूस पर अपना खून बहाने की भविष्यवाणी थी। मुझे लगता है कि यह एक संभावित इरादा है। मैं इस विषय पर और भी बातें कह सकता हूँ, क्योंकि रूपक और अटकलबाजी में यही समस्या है कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार की काव्यात्मक समानता के माध्यम से किसी भी चीज को कोई भी अर्थ दे सकता है।

इस अजीब घटना के बारे में बाइबिल से हम जो एकमात्र ठोस संबंध देखते हैं, वह यह है कि पाप का निपटारा किसी तरह के ईश्वर द्वारा नियुक्त वस्तु द्वारा किया जा रहा था जिसे खंभे पर कील ठोंक कर हवा में ऊपर उठाया जा रहा था। मूसा के युग में यह साराप था और जिस पाप का

निपटारा किया जा रहा था वह लोगों का विद्रोह था। यीशु के युग में वस्तु उसका अपना शरीर था और जिस पाप का निपटारा किया जा रहा था वह सभी पाप थे। एक और ठोस संबंध यह है कि लोग खंभे पर उस वस्तु को देखते थे और किसी तरह की चँगाई का अनुभव करते थे। फिर से मूसा के युग में यह ज्वलंत सर्प को देख रहा था, यीशु के युग में यह उसे देख रहा था। और दोनों मामलों में इसके लिए पश्चाताप और एक तरह के गहरे भरोसे की आवश्यकता थी।

इसके अलावा मुझे यकीन नहीं है कि हम इससे अधिक महत्व दे सकते हैं। वास्तव में मुझे पीतल के सर्प की कहानी का अधिक जानकारीपूर्ण और ठोस पहलू सेराफिम (स्वर्गीय साराप), अदन की वाटिका के सर्प (शैतान), खंभे पर साराप (आग का सॉप) और प्रकाशितवाक्य के ड्रैगन, जिसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था, के बीच बाइबिल आधारित संबंध लगता है।

मुझे इस विचार के साथ अग्नि सर्प पर इस खंड को समाप्त करना चाहिए शायद इस कहानी से हम जो सबसे महत्वपूर्ण सबक ले सकते हैं, वह है ईश्वर द्वारा निर्धारित प्रतीक से मूर्ति पूजा तक की बहुत-सी, क्रमिक, मेंढक-में-एक तरह की प्रगति। इससे अधिक स्पष्ट कुछ भी नहीं हो सकता कि खंभे पर अग्नि सर्प को ईश्वरीय निदेश दिया गया था और इसलिए वह शुद्ध और अच्छा था, और केवल एक ही चीज़ जो मूसा और लोग कर सकते थे वह थी आज्ञा का पालन करना और धातु की वस्तु के कारण नहीं बल्कि ईश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता के कारण उपचार प्राप्त करना। फिर भी ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह इंगित करे कि यह एक अनोखी और विशिष्ट समस्या का एक बार का एकल समाधान था, विद्रोह के कारण सर्प के काटने की महामारी।

खंभे पर सर्प को सामान्य उपचार के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्य प्रतीक या ताबीज नहीं बनना था। हमने परमेश्वर को अन्य समयों पर ऐसा करते देखा है। एक बार मूसा को पानी देने के लिए चट्टान पर प्रहार करने के लिए कहा गया था। दूसरी बार उसे पानी देने के लिए चट्टान से बात करने के लिए कहा गया था। इसका मतलब यह नहीं था कि मूसा को यह मान लेना चाहिए था कि जब भी इस्राएल को पानी की ज़रूरत होगी, तो उसे अपनी इच्छा से, एक आशाजनक चट्टान की तलाश करनी होगी और उससे बात करके या हारून की छ रीसे उसे मारकर लोगों के लिए पानी निकालना होगा। न ही इस्राएल को ऐसी चट्टान की तलाश करनी थी जो लगभग उसी चट्टान के समान हो जिसने अपना पानी दिया था, न ही लोगों को इकट्ठा होकर चट्टान से पानी माँगना था, या उस पर धूप जलाना था, या चट्टान की पूजा करने वाला पंथ शुरू करना था।

हमने देखा कि जाहिर तौर पर पोल पर पीतल या अग्नि सर्प को इस्राएलियों ने पलायन के बाद कम से कम 5 शताब्दियों तक एक सक्रिय प्रतीक के रूप में रखा था। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि परमेश्वर का इरादा था कि इस्राएल को ऐसा करना चाहिए था, और इस बात का कोई संकेत नहीं है कि उस पोल और सर्प से जुड़ी रीचिकित्सा की अन्य घटनाएँ थीं। लेकिन लोग तो लोग ही थे, इस्राएल को उम्मीद थी कि जब भी उन्हें चाहिए होगा, उसे उपचार के लिए एक जादुई ताबीज मिल जाएगी। लोग हर समय बीमार और घायल होते रहते थे; और आज की तरह ही, लोग अपनी पीड़ा को दूर करने और अपने शरीर को ठीक करने और जीवन को बढ़ाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते

हैं। और इसलिए इब्रानियों ने सर्प की कांस्य प्रतिमा के साथ पोल को रखा, और अंततः उन्होंने पोल और सर्प का सम्मान और आदर करना शुरू कर दिया, इस उम्मीद में कि इसे श्रद्धांजलि देने से उपचार होगा। इस सब में दोष यह था कि उन्होंने उस वस्तु की पूजा की, जो वास्तव में उपचार कर सकती है।

यहोवा, जिसका कोई रूप नहीं है। राजा हिजकिय्याह को आखिरकार इसका एहसास हुआ और उसने उस चीज़ को नष्ट कर दिया जो परमेश्वर के अधिकृत, केवल एक उपयोग वाले दिव्य उपकरण के रूप में शुरू हुई थी, लेकिन दुरुपयोग के कारण यह झूठी उपासना, जादू-टोना और मूर्तिपूजा का एक बेकार और अधर्मी विषय बन गया था।